Job

Chapter 15

Hindi Interlinear

Reference: Hindi Easy-to-Read Version

1

וַיַּעַן	אֱלִיפַז	הַתֵּימָנִי	וַיֹּאמַר׃
और-उत्तर-दिया	एलीपज़	तेमानी-ने	और-कहा
	H0464	H8489	H0559

इस पर तेमान नगर के निवासी एलीपज ने अय्यूब को उत्तर देते हुए कहा:

2

הֶחָכָם	יַעֲנֶה	דַעַת־	רוּחַ	וִימַלֵּא	קָדִים	בִּטְנוֹ׃
क्या-बुद्धिमान	उत्तर-देगा	ज्ञान	हवा-का	और-भरेगा	पूरवी-हवा-से	अपना-पेट
H2450		H1847	H7307	H4390	H6921	H0990

“अय्यूब, य़दि तू सचमुच बुद्धिमान होता तो रोते शब्दों से तू उत्तर न देता। क्या तू सोचता है कि कोई विवेकी पुरुष पूर्व की लू की तरह उत्तर देता है

3

הוֹכֵחַ	בְּדָבָר	לֹא	יִסְכּוֹן	וּמִלִּים	לֹא־	יוֹעִיל	בָּם׃
तर्क-करना	वचन-से	नहीं	लाभदायक	और-शब्द	नहीं	लाभ-देता	उनसे
H3198	H1697	H3808	H5532	H4405	H3808	H3276	

क्या तू सोचता है कि कोई बुद्धिमान पुरुष व्यर्थ के शब्दों से और उन भाषणों से तर्क करेगा जिनका कोई लाभ नहीं

4

אַף־	אַתָּה	תָּפֵר	יִרְאָה	וְתִגְרַע	שִׂיחָה	לִפְנֵי־	אֵל׃
कितना-अधिक	तू	तोड़ता-है	भय	और-कम-करता-है	ध्यान	सामने	ईश्वर-के
H0637			H3374	H1639	H7881	H6440	H0410

अय्यूब, यदि तू मनमानी करता है तो कोई भी व्यक्ति परमेश्वर की न तो आदर करेगा, न ही उससे प्रार्थना करेगा।

5

כִּי	יְאַלֵּף	עֲוֺנְךָ	פִיךָ	וְתִבְחַר	לְשׁוֹן	עֲרוּמִים׃
क्योंकि	सिखाता-है	तेरा-अधर्म	तेरे-मुँह-को	और-तू-चुनता-है	जीभ	चतुरों-की
	H0502	H5771	H6310	H0977	H3956	H6175

तू जिन बातों को कहता है वह तेरा पाप साफ साफ दिखाती हैं। अय्यूब, तू चतुराई भरे शब्दों का प्रयोग करके अपने पाप को छिपाने का प्रयत्न कर रहा है।

6

יַרְשִׁיעֲךָ	פִיךָ	וְלֹא־	אָנִי	וּשְׂפָתֶיךָ	יַעֲנוּ־	בָךְ׃
तुझे-दोषी-ठहराता-है	तेरा-मुँह	और-नहीं	मैं	और-तेरे-होंठ	गवाही-देते-हैं	तेरे-विरुद्ध
H7561	H6310	H3808	H0589	H8193		

तू उचित नहीं यह प्रमाणित करने की मुझे आवश्यकता नहीं है। क्योंकि तू स्वयं अपने मुख से जो बातें कहता है, वह दिखाती हैं कि तू बुरा है और तेरे ओंठ स्वयं तेरे विरुद्ध बोलते हैं।

7

הֲרִאישׁוֹן	אָדָם	תִּוָּלֵד	וְלִפְנֵי	גְבָעוֹת	חוֹלָלְתָּ׃
क्या-पहले	मनुष्य	तू-जन्मा-था	और-पहले	पहाड़ियों-से	तू-उत्पन्न-हुआ-था
H7223	H0120	H3205	H6440	H1389	

“अय्यूब, क्या तू सोचता है कि जन्म लेने वाला पहला व्यक्ति तू ही है? और पहाड़ों की रचना से भी पहले तेरा जन्म हुआ।

8

הַבְסוֹד	אֱלוֹהַּ	תִּשְׁמָע	וְתִגְרַע	אֵלֶיךָ	חָכְמָה׃
क्या-गुप्त-योजना-में	ईश्वर-की	तूने-सुनी	और-क्या-तूने-सीमित-की	अपने-लिए	बुद्धि
H5475	H0433	H8085	H1639	H0413	H2451

क्या तूने परमेश्वर की रहस्यपूर्ण योजनाऐं सुनी थी क्या तू सोचा करता है कि एक मात्र तू ही बुद्धिमान है?

9

מַה־	יָּדַעְתָּ	וְלֹא	נֵדָע	תָּבִין	וְלֹא־	עִמָּנוּ	הוּא׃
क्या	तू-जानता-है	जो-नहीं	हम-जानते	तू-समझता-है	जो-नहीं	हमारे-पास	है-वह
H4100	H3045	H3808	H3045	H0995	H3808		H1931

> अय्यूब, तू हम से अधिक कुछ नहीं जानता है। वे सभी बातें हम समझते हैं, जिनकी तुझको समझ है।

יָמִים׃	מֵאָבִיךָ	כַּבִּיר	בָּנוּ	יָשִׁישׁ	גַּם־	שָׂב	גַּם־	10
दिनों-में	तेरे-पिता-से	बड़ा	हमारे-बीच	बहुत-बूढ़ा	भी	बूढ़ा	भी	
H3117	H0001	H3524		H3453	H1571	H7867	H1571	

> वे लोग जिनके बाल सफेद हैं और वृद्ध पुरुष हैं वे हमसे सहमत रहते हैं। हाँ, तेरे पिता से भी वृद्ध लोग हमारे पक्ष में हैं।

עִמָּךְ׃	לָאַט	וְדָבָר	אֵל	תַּנְחֻמוֹת	מִמְּךָ	הַמְעַט	11
तेरे-साथ	कोमल	और-वचन	ईश्वर-की	सान्त्वनाएँ	तेरे-लिए	क्या-थोड़ी	
		H1697	H0410	H8575		H4592	

> परमेश्वर तुझको सुख देने का प्रयत्न करता है, किन्तु यह तेरे लिये पर्याप्त नहीं है। परमेश्वर का सुसन्देश बड़ी नम्रता के साथ हमने तुझे सुनाया।

עֵינֶיךָ׃	יִּרְזְמוּן	וּמַה־	לִבֶּךָ	יִּקָּחֲךָ	מַה־	12
तेरी-आँखें	इशारा-करती-हैं	और-क्या	तेरा-हृदय	ले-जाता-है-तुझे	क्या	
	H7335	H4100		H3947	H4100	

> अय्यूब, क्यों तेरा हृदय तुझे खींच ले जाता है तू क्रोध में क्यों हम पर आँखें तरेरता है?

מִלִּין׃	מִפִּיךָ	וְהֹצֵאתָ	רוּחֶךָ	אֵל	אֶל־	תָשִׁיב	כִּי־	13
शब्द	अपने-मुँह-से	और-निकालता-है	अपनी-आत्मा	ईश्वर	की-ओर	तू-मोड़ता-है	कि	
H4405	H6310	H3318	H7307	H0410	H0413	H7725		

> जब तू इन क्रोध भरे वचनों को कहता है, तो तू परमेश्वर के विरुद्ध होता है।

אִשָּׁה׃	יְלוּד	יִצְדַּק	וְכִי־	יִזְכֶּה	כִּי־	אֱנוֹשׁ	מָה־	14
स्त्री-से	जन्मा	धर्मी-ठहरे	और-कि	शुद्ध-हो	कि	मनुष्य	क्या	
H0802	H3205	H6663		H2135		H0582	H4100	

> “सचमुच कोई मनुष्य पवित्र नहीं हो सकता। मनुष्य स्त्री से पैदा हुआ है, और धरती पर रहता है, अत: वह उचित नहीं हो सकता।

בְעֵינָיו׃	זַכּוּ	לֹא־	וְשָׁמַיִם	יַאֲמִין	לֹא	(בִּקְדֹשָׁיו)	[בקדשו]	הֵן	15
उसकी-आँखों-में	शुद्ध-हैं	नहीं	और-आकाश	वह-भरोसा-करता	नहीं	अपने-पवित्रों-पर	—	देखो	
	H2141	H3808	H8064	H0539	H3808	H6918	H6918	H2005	

> यहाँ तक कि परमेश्वर अपने दूतों तक का विश्वास नहीं करता है। यहाँ तक कि स्वर्ग जहाँ स्वर्गदूत रहते हैं पवित्र नहीं है।

עַוְלָה׃	כַמַּיִם	שֹׁתֶה	אִישׁ־	וְנֶאֱלָח	נִתְעָב	כִּי־	אַף	16
अन्याय	पानी-की-तरह	पीने-वाला	मनुष्य	और-भ्रष्ट	घृणित	कि	कितना-अधिक	
	H4325	H8354	H0376	H0444	H8581		H0637	

> मनुष्य तो और अधिक पापी है। वह मनुष्य मलिन और घिनौना है वह बुराई को जल की तरह गटकता है।

וַאֲסַפֵּרָה׃	חָזִיתִי	וְזֶה־	לִי	שְׁמַע־	אֲחַוְךָ	17
और-मैं-बताऊँगा	मैंने-देखा	और-यह	मुझे	सुन	मैं-तुझे-बताऊँगा	
	H2372	H2088		H8085	H2331	

> “अय्यूब, मेरी बात तू सुन और मैं उसकी व्याख्या तुझसे करूँगा। मैं तुझे बताऊँगा, जो मैं जानता हूँ।

מֵאֲבוֹתָם׃	כִחֲדוּ	וְלֹא	יַגִּידוּ	חֲכָמִים	אֲשֶׁר־	18
अपने-पितरों-से	उन्होंने-छिपाया	और-नहीं	बताया	बुद्धिमानों-ने	जो	
H0001	H3582	H3808	H5046	H2450		

> मैं तुझको वे बातें बताऊँगा, जिन्हें विवेकी पुरुषों ने मुझको बताया है और विवेकी पुरुषों को उनके पूर्वजों ने बताई थी। उन विवेकी पुरुषों ने कुछ भी मुझसे नहीं छिपाया।

בְּתוֹכָם׃	זָר	עָבַר	וְלֹא־	הָאָרֶץ	נִתְּנָה	לְבַדָּם	לָהֶם	19
उनके-बीच	परदेशी	गुजरा	और-नहीं	भूमि	दी-गई	अकेले	उन्हें	
H8432			H3808	H0776	H5414	H0905		

> केवल उनके पूर्वजों को ही देश दिया गया था। उनके देश में कोई परदेशी नहीं था।

20

כָּל־	יְמֵי	רָשָׁע	ה֣וּא	מִתְחוֹלֵל	וּמִסְפַּר	שָׁנִים	נִצְפְּנוּ	לֶעָרִיץ׃
सब	दिनों	दुष्ट-के	वह	काँपता-है	और-गिनती	वर्षों-की	छिपी-है	अत्याचारी-के-लिए
H3605	H3117	H7563	H1931		H4557	H8141	H6845	H6184

> दुष्ट जन जीवन भर पीड़ा झेलेगा और क्रूर जन उन सभी वर्षों में जो उसके लिये निश्चित किये गये है, दु:ख उठाता रहेगा।

21

קוֹל־	פְּחָדִים	בְּאָזְנָיו	בַּשָּׁלוֹם	שׁוֹדֵד	יְבוֹאֶנּוּ׃
आवाज़	भयों-की	उसके-कानों-मे	शान्ति-में	लुटेरा	उस-पर-आएगा
	H6343	H0241	H7965	H7703	H0935

> उसके कानों में भयंकर ध्वनियाँ होगी। जब वह सोचेगा कि वह सुरक्षित है तभी उसके शत्रु उस पर हमला करेंगे।

22

לֹא־	יַאֲמִין	שׁוּב	מִנִּי־	חֹשֶׁךְ	[וצפו]	(וְצָפוּי)	הוּא	אֱלֵי־	חָרֶב׃
नहीं	वह-विश्वास-करता	लौटना	से	अंधकार	—	और-वह-नियत	है	की-ओर	तलवार
H3808	H0539	H7725		H2822	H6822	H6822	H1931	H0413	H2719

> दुष्ट जन बहुत अधिक निराश रहता है और उसके लिये कोई आशा नहीं है, कि वह अंधकार से बच निकल पाये। कहीं एक ऐसी तलवार है जो उसको मार डालने की प्रतिज्ञा कर रही है।

23

נֹדֵד	הוּא	לַלֶּחֶם	אַיֵּה	יָדַע	כִּי־	נָכוֹן	בְּיָדוֹ	יוֹם־	חֹשֶׁךְ׃
भटकने-वाला	वह	रोटी-के-लिए	कहाँ	वह-जानता-है	कि	तैयार	उसके-हाथ-में	दिन	अंधकार-का
H5074	H1931	H3899	H0346	H3045			H3027	H3117	H2822

> वह इधर—उधर भटकता हुआ फिरता है किन्तु उसकी देह गिद्धों का भोजन बनेगी। उसको यह पता है कि उसकी मृत्यु बहुत निकट है।

24

יְבַעֲתֻהוּ	צַר	וּמְצוּקָה	תִּתְקְפֵהוּ	כְּמֶלֶךְ	עָתִיד	לַכִּידוֹר׃
डराएगा-उसे	संकट	और-कष्ट	उसे-हराएगा	राजा-की-तरह	तैयार	युद्ध-के-लिए
H1204		H4691	H8630	H4428	H6264	H3593

> चिंता और यातनाऐं उसे डरपोक बनाती है और ये बातें उस पर ऐसे वार करती है, जैसे कोई राजा उसके नष्ट कर डालने को तत्पर हो।

25

כִּי־	נָטָה	אֶל־	אֵל	יָדוֹ	וְאֶל־	שַׁדַּי	יִתְגַּבָּר׃
क्योंकि	उसने-बढ़ाया	की-ओर	ईश्वर	अपना-हाथ	और-की-ओर	सर्वशक्तिमान	वह-शक्तिशाली-होता-है
	H5186	H0413	H0410	H3027	H0413	H7706	H1396

> क्यो क्योंकि दुष्ट जन परमेश्वर की आज्ञा मानने से इन्कार करता है, वह परमेश्वर को घूसा दिखाता हैय? और सर्वशक्तिमान परमेश्वर को पराजित करने का प्रयास करता है।

26

יָרוּץ	אֵלָיו	בְּצַוָּאר	בַּעֲבִי	גַּבֵּי	מָגִנָּיו׃
वह-दौड़ता-है	उसकी-ओर	गर्दन-से	मोटाई-से	पीठों	अपनी-ढालों-की
H7323	H0413		H5672	H1354	H4043

> वह दुष्ट जन बहुत हठी है। वह परमेश्वर पर एक मोटी मजबूत ढाल से वार करना चाहता है।

27

כִּי־	כִסָּה	פָנָיו	בְּחֶלְבּוֹ	וַיַּעַשׂ	פִימָה	עֲלֵי־	כָסֶל׃
क्योंकि	उसने-ढाँका	अपना-चेहरा	अपनी-चर्बी-से	और-बनाया	मोटापा	पर	कमर
	H3680	H6440	H2459		H6371		H3689

> दुष्ट जन के मुख पर चर्बी चढ़ी रहती है। उसकी कमर माँस भर जाने से मोटी हो जाती है।

28

וַיִּשְׁכּוֹן	עָרִים	נִכְחָדוֹת	בָּתִּים	לֹא־	יֵשְׁבוּ	לָמוֹ	אֲשֶׁר	הִתְעַתְּדוּ	לְגַלִּים׃
और-वह-बसा	नगरों-में	उजड़ों	घरों-में	नहीं	कोई-रहता	उनके-लिए	जो	तैयार-हो-गए	खण्डहरों-के-लिए
H7931		H3582		H3808	H3427			H6257	H1530

> किन्तु वह उजड़े हुये नगरों में रहेगा। वह ऐसे घरों में रहेगा जहाँ कोई नहीं रहता है। जो घर कमजोर हैं और जो शीघ्र ही खण्डहर बन जायेंगे।

29

לֹא־	יֶעְשַׁר	וְלֹא־	יָקוּם	חֵילוֹ	וְלֹא־	יִטֶּה	לָאָרֶץ	מִנְלָם׃
नहीं	वह-धनी-होगा	और-नहीं	खड़ी-होगी	उसकी-सम्पत्ति	और-नहीं	फैलेगी	भूमि-पर	उसकी-उपज
H3808	H6238	H3808		H2428	H3808	H5186	H0776	H4512

> दुष्ट जन अधिक समय तक धनी नहीं रहेगा उसकी सम्पत्तियाँ नहीं बढ़ती रहेंगी।

30										
	לֹא־	יָסוּר	מִנִּי־	חֹשֶׁךְ	יֹנַקְתּוֹ	תְּיַבֵּשׁ	שַׁלְהָבֶת	וְיָסוּר	בְּרוּחַ	פִּיו׃
	नहीं	वह-हटेगा	से	अंधकार	उसकी-शाखाएँ	सुखाएगी	लपट	और-वह-हट-जाएगा	साँस-से	उसके-मुँह-की
	H3808	H5493		H2822	H3127	H3001	H7957	H5493	H7307	H6310

> दुष्ट जन अन्धेरे से नहीं बच पायेगा। वह उस वृक्ष सा होगा जिसकी शाखाऐं आग से झुलस गई हैं। परमेश्वर की फूँक दुष्टों को उड़ा देगी।

31									
	אַל־	יַאֲמֵן	[בשו]	(בַּשָּׁיו)	נִתְעָה	כִּי־	שָׁוְא	תִּהְיֶה	תְמוּרָתוֹ׃
	ना	वह-भरोसा-करे	—	व्यर्थता-पर	भटका-हुआ	क्योंकि	झूठ	होगी	उसकी-बदली
	H0408	H0539	H7723	H7723	H8582		H7723	H1961	H8545

> दुष्ट जन व्यर्थ वस्तुओं के भरोसे रह कर अपने को मूर्ख न बनाये क्योंकि उसे कुछ नहीं प्राप्त होगा।

32						
	בְּלֹא־	יוֹמוֹ	תִּמָּלֵא	וְכִפָּתוֹ	לֹא	רַעֲנָנָה׃
	बिना	उसका-दिन	पूरी-होगी	और-उसकी-डाली	नहीं	हरी-भरी
	H3808	H3117	H4390	H3712	H3808	

> दुष्ट जन अपनी आयु के पूरा होने से पहले ही बूढ़ा हो जायेगा और सूख जायेगा। वह एक सूखी हुई डाली सा हो जायेगा जो फिर कभी भी हरी नहीं होगी।

33						
	יַחְמֹס	כַּגֶּפֶן	בִּסְרוֹ	וְיַשְׁלֵךְ	כַּזַּיִת	נִצָּתוֹ׃
	वह-झाड़ेगा	अंगूर-की-तरह	अपने-कच्चे-फल	और-गिराएगा	जैतून-की-तरह	अपने-फूल
	H2554	H1612	H1154	H7993	H2132	H5328

> दुष्ट जन उस अंगूर की बेल सा होता है जिस के फल पकने से पहले ही झड़ जाते हैं। ऐसा व्यक्ति जैतून के पेड़ सा होता है, जिसके फूल झड़ जाते हैं।

34								
	כִּי־	עֲדַת	חָנֵף	גַּלְמוּד	וְאֵשׁ	אָכְלָה	אָהֳלֵי־	שֹׁחַד׃
	क्योंकि	मण्डली	कपटियों-की	बाँझ	और-आग	खाएगी	तम्बूओं-को	रिश्वत-के
		H5712	H2611	H1565	H0784	H0398	H0168	H7810

> क्यों क्योंकि परमेश्वर विहीन लोग खाली हाथ रहेंगे। ऐसे लोग जिनको पैसों से प्यार है, घूस लेते हैं। उनके घर आग से नष्ट हो जायेंगे।

35								
	הָרֹה	עָמָל	וְיָלֹד	אָוֶן	וּבִטְנָם	תָּכִין	מִרְמָה׃	ס
	गर्भवती	कष्ट-से	और-जन्म-देने-वाली	अधर्म	और-उनका-पेट	तैयार-करता-है	छल	—
	H2029	H5999	H3205	H0205	H0990		H4820	

> वे पीड़ा का कुचक्र रचते हैं और बुरे काम करते हैं। वे लोगों को छलने के ढंगों की योजना बनाते हैं।”